Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ महालक्ष्मी व्रत कथा ॥

॥ जय माँ महालक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कुंती और गांधारी को व्रत का उपदेश ॥

यह सोलह दिवसीय महालक्ष्मी व्रत की प्रचलित कथा का स्वतंत्र, संक्षिप्त रूपांतरण है। दूसरी लोकपरंपराओं में कथा के पात्र और घटनाएँ भिन्न मिलते हैं।

कथा के अनुसार महर्षि व्यास एक बार हस्तिनापुर आए। गांधारी और कुंती ने उनसे परिवार के मंगल के लिए कोई व्रत बताने को कहा। व्यासजी ने महालक्ष्मी की आराधना का विधान समझाया: भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से संकल्प लेकर आश्विन कृष्ण अष्टमी तक माता का स्मरण और पूजा करें।

उन्होंने स्वच्छता, श्रद्धा, पुष्प, दूर्वा और सूत्र की रीति बताई। अंतिम दिन महालक्ष्मी और हाथी के प्रतीक की पूजा, कथा तथा प्रसाद का विधान भी बताया। यह सुनकर दोनों ने व्रत का संकल्प लिया और नगर की अन्य स्त्रियों ने भी तैयारी शुरू की।

दिन बीतते गए। गांधारी के महल में भव्य उत्सव की तैयारी हुई। उनके पुत्रों ने मिट्टी का एक बड़ा हाथी बनवाया और अनेक लोगों को निमंत्रण भेजा। पर कुंती को बुलावा नहीं पहुँचा। इससे उनका मन खिन्न हो गया और वे अंतिम पूजा की तैयारी में पीछे रह गईं।

पांडवों ने माता को उदास देखा तो कारण पूछा। कुंती ने कहा कि महालक्ष्मी के पूजन में हाथी का प्रतीक सजाना है, पर उनके पास न समय है, न वैसी व्यवस्था। अर्जुन ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे अपनी श्रद्धा से पूजा की तैयारी करें।

॥ अर्जुन और ऐरावत का प्रसंग ॥

लोककथा कहती है कि अर्जुन देवेंद्र के पास पहुँचे और माता के पूजन के लिए ऐरावत हाथी को लाने की अनुमति माँगी। अनुमति मिलने पर वे ऐरावत के साथ हस्तिनापुर लौटे। कुंती ने माता लक्ष्मी के चित्र, दीप, फूल और नैवेद्य से पूजा स्थान सजाया।

ऐरावत के आने की चर्चा नगर में फैल गई। कई लोग कुंती के यहाँ भी पहुँचे। कुंती ने सबका स्वागत किया और माता का पूजन किया। कथा में इस अवसर पर हाथी को देवी के वैभव का प्रतीक मानकर सम्मान दिया गया है।

कुंती ने व्रत की कथा सुनी और परिवार के मंगल के लिए प्रार्थना की। गांधारी के यहाँ भी पूजा हुई। अलग स्थानों पर हुए पूजन से कथा यह संकेत देती है कि श्रद्धा किसी एक महल या बड़े आयोजन तक सीमित नहीं है।

अंत में सबने महालक्ष्मी को प्रणाम किया और प्रसाद ग्रहण किया। कुंती का मन शांत हुआ। अर्जुन ने भी जाना कि मदद केवल बड़ी वस्तु लाने में नहीं, किसी अपने की बात सुनने और उसके साथ खड़े होने में है।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कथा का संदेश और क्षेत्रीय रूप ॥

श्रद्धा और सम्मान

कुंती की पीड़ा उपेक्षा से जुड़ी थी। कथा परिवार में सम्मान, साझेदारी और सहयोग की सीख देती है। मिट्टी का हाथी और ऐरावत पूजा में हाथी की प्रतीकात्मक भूमिका बताते हैं। घर में जीवित हाथी की आवश्यकता नहीं है।

अन्य प्रचलित कथा

कुछ पुस्तिकाओं में भगवान विष्णु से वर माँगने वाले ब्राह्मण और माता लक्ष्मी द्वारा सोलह दिन का व्रत बताने का प्रसंग भी पढ़ा जाता है। कहीं राजा मंगलार्ण तथा रानी पद्मावती का रूप मिलता है। घर की कथा-पुस्तिका के अनुसार पाठ करें।

कथा के अलौकिक दृश्य आस्था की भाषा हैं। पूजा का सार अपनी क्षमता से नियमित स्मरण, दूसरों के प्रति आदर और घर के संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग है।

॥ जय माँ महालक्ष्मी ॥

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"